Scissor's Crisis /

कैंची संकट का प्रारम्भ मई, 1922 के पश्चात हुआ।
कृषि पदार्थों की बाजार में पूर्ति बढ़ने तथा औद्योगिक वस्तुओं की उत्पत्ति गिरने से कृषि पदार्थों के मूल्यों में कमी, तथा औद्योगिक वस्तुओ के मूल्यो मे वृद्धि होने लग गई थी।
कृषि तथा औद्योगिक वस्तुओ के मूल्य-सूचकांकों को रेखाचित्र के रूप मे प्रस्तुत किया जाये तो रेखाचित्र का रूप कैंची के दो फलकों के समान हो जाता है।
ट्रोटस्की ने इसे कैंची संकट की संज्ञा दी है।
कृषि तथा औद्योगिक वस्तुओं के मूल्यों मे असन्तुलन को प्रदर्शित करती है।
कृषि एवं उद्योगों के विकास में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई थी।
मई 1922 के बाद औद्योगिक सामग्री के भावो मे वृद्धि तथा कृषि उत्पादन के भावो मे लगातार गिरावट से अक्टूबर 1923 मे इनका अनुपात 3:1 तक पहुँच गया था।
कृषि मूल्य सूचकांक जो मई 1922 मे 113 था, अक्टूबर, 1923 मे घटकर केवल 88 रह गया।
औद्योगिक वस्तुओ के मूल्यो का सूचकांक 74 से बढ़कर 175 हो गया।
निम्न तालिका कृषि व उद्योगो की वस्तुओ

के मूल्यों में परिवर्तन को स्पष्ट करती है।

वर्ष	कृषि मूल्यों के सूचकांक (1913 = 100)	औद्योगिक मूल्यों के सूचकांक (1913 = 100)
मई 1922	113.0	74.0
अगस्त 1922	100.5	99.0
सितम्बर 1922	54.0	112.0
अक्टूबर 1923	88.0	75.0

तालिका से स्पष्ट है कि कृषि और उद्योग-उत्पादन - मूल्यों के घोर असन्तुलन उत्पन्न हो गया।
मूल्यों सम्बन्धी यह परिवर्तन कम हुए कृषि मूल्यों के स्थान पर गिरते हुए कृषि मूल्य तथा गिरते हुए औद्योगिक मूल्यों के स्थान पर बढ़ते हुए।
कैंची के फलकों के समान एक-दूसरे के विपरीत दिशा में हुआ।
" कैंची संकट " का नाम दिया गया।
कैंची संकट के कारण : →

1. औद्योगिक उत्पादन में कमी : →
मई 1922 तक औद्योगिक वस्तुओं के मूल्य में कमी होने से उद्योगों में उत्पादन कम हो गया था। उत्पादन क्षमता का पूरा उपयोग नहीं हो पा रहा था।

2. उदार आर्थिक - नीति : →

Date
Page

उदार साख - नीति से उद्योगों का विनियोग बढ़ा तथा संग्रह प्रवृत्ति बढ़ी।
विनियोग बढ़ने तथा औद्योगिक माल की बिक्री-योग्य-पूर्ति में कमी से मुद्रा - स्फीति उत्पन्न हो गई।

3. औद्योगिक उत्पादन लागत में वृद्धि :→
राजकीय उद्योगों में अव्यवस्था तथा अकुशलता के कारण लागत वृद्धि ने औद्योगिक मूल्यों को बढ़ाने में योग दिया।

4. कृषि उत्पादन में तेजी से वृद्धि :→
मई 1922 में कृषि पदार्थों के ऊंचे मूल्यों से कृषि में उत्पादन को बढ़ावा मिला तथा फसल आने पर कृषि पदार्थों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई।
मांग कम - लोचदार होने से मूल्यों में गिरावट स्वाभाविक थी।

5. लाभ की प्रवृत्ति :→
बड़े - बड़े उद्योगों में लाभ के लिए उत्पादन की नीति के कारण भी औद्योगिक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि हुई।

6. दोषपूर्ण सरकारी नीति :→
सरकार के द्वारा कृषि पदार्थों के मूल्यों का निर्धारण निम्न स्तर पर किया जाता था।
कृषक असंगठित थे, सरकार से उधार सहायता के अभाव में अपनी उपज को बेचने लिए बाध्य होना पड़ता था।

कैंची संकट के प्रभाव : →

1. कृषि पदार्थों के मूल्यो मे कमी के कारण कृषको की आय मे तेजी से कमी आयी

2. व्यापारिक संघ काफी सुदृढ़ स्थिति मे थे, निर्मित माल की बिक्री न हो पाने के कारण माल इकट्ठा होता चला गया।

3. उद्योगपतियो द्वारा निर्धन वर्ग का शोषण किया जाने लगा, वर्ग संघर्ष उत्पन्न हो गया।

4. उद्योगो मे अति लाभ के कारण उद्योगो का असमय व असंतुलित विकास सामने आया

5. श्रमिक व कृषको मे आपस मे सम्बन्ध बिगड़ने लग गये, कृषक श्रमिको को अपना शोषक मानते थे।

कैंची संकट के उपाय : →

1. आयात को प्रोत्साहन : →

सरकार ने विदेशो से औद्योगिक प्रयासो को दी जाने वाली वस्तुओ के आयात को प्रोत्साहित कर उनके उचित वितरण की व्यवस्था की। औद्योगिक सामग्री के भावो मे वृद्धि कम हो गई।

2. साख का नियमन : →

स्टेट बैंक द्वारा औद्योगिक प्रयासो को दी जाने वाली साख व ऋण की राशि सीमित कर दी गयी तथा ब्याज की दर बढ़ा दी गयी।
औद्योगिक सामग्री के भावो मे वृद्धि कम हो गई।

3. **मूल्य - नीति - निर्धारण :** →

राज्य द्वारा देश में औद्योगिक पुष्पारों को दी जाने वाली वस्तुओं के अधिकतम भाव - निर्धारित कर दिये गये तथा उद्योगों की लाभ - मात्रा में कमी करने के प्रयास किये गए।

4. **समुचित वितरण व्यवस्था :** →

सरकार ने व्यक्तिगत व्यापार को सीमित कर राजकीय व्यापार को बढ़ावा दिया।
1922-23 में निजी व्यापार का भाग 76.8 प्रतिशत था, घटकर 1927-28 में 22.8 हो गया।

5. **औद्योगिक उत्पादन - लागत में कमी :** →

उत्पादन लागत में कमी करने के लिए उद्योगों के प्रबन्ध में कुशलता, अभिनवीकरण, वैज्ञानिक प्रबन्ध और पूर्ण क्षमता का उपयोग करने के प्रयत्न किए गये।

6. **कृषकों के लिए साख की व्यवस्था :** →

कृषकों को अपने माल रोके रखने की दृष्टि से बैंकों ने उन्हें उदार शर्तों पर ऋण देने की व्यवस्था की। कृषि पदार्थों की पूर्ति में कमी लाकर कृषि मूल्य में वृद्धि करना था।
फलस्वरूप 1924 में इस संकट पर काबू पा लिया। औद्योगिक व कृषि पदार्थों के मूल्य का अनुपात और सितम्बर 1923 में 3:1 था, 1924 में घटकर 1.5:1 रह गया। धीरे - धीरे 1928 तक संकट पर पूर्ण नियन्त्रण कर लिया गया।

Scanned with CamScanner